www.xtrapapers.com

M15/2/ABHIN/SP1/HIN/TZ0/XX/T

Diploma Programme
Programme du diplôme
Programa del Diploma

Hindi B – Standard level – Paper 1
Hindi B – Niveau moyen – Épreuve 1
Hindi B – Nivel medio – Prueba 1

Friday 8 May 2015 (afternoon)
Vendredi 8 mai 2015 (après-midi)
Viernes 8 de mayo de 2015 (tarde)

1 h 30 m

Text booklet – Instructions to candidates

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for paper 1.
- Answer the questions in the question and answer booklet provided.

Livret de textes – Instructions destinées aux candidats

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

Cuaderno de textos – Instrucciones para los alumnos

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

5 pages/páginas

2215 – 2259
© International Baccalaureate Organization 2015

International Baccalaureate
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

www.xtrapapers.com

पाठांश क

चटखारे भारतीय गलियों के

कहीं चाट* की खुशबु, कहीं चटपटी भेल* का स्वाद तो कहीं रसगुल्लों* की मिठास, भारतीय गलियों के विविध स्वादों का सफ़र ही ऐसा है कि मन करता है यह कभी समाप्त न हो। खाने की सौंधी महक, खट्टेमीठे, तीखे स्वाद खाने के प्रेमियों को आकर्षित करते हैं। दिल्ली के चांदनी चौक के पास स्थित परांठे वाली गली में सवा सौ साल पुरानी दुकानों पर परांठों* को शुद्ध घी में सेंकने के बजाय तला जाता है। मध्यप्रदेश की व्यावसायिक राजधानी इंदौर की छप्पन दुकान, इंदौर के खानपान व स्वाद की विरासत को समेटे हुए है। वस्तुतः छप्पन दुकान, 56 दुकानों की एक श्रृंखला है जहाँ विभिन्न व्यंजनों का आनंद उठाया जा सकता है। मुम्बई की व्यस्त जीवनशैली में खाऊ गली जीभ के स्वाद को पूरा करती है। यहाँ शुद्ध कोल्हापुरी व्यंजन मिसल पाव में तीखी कोल्हापुरी लवंगी मिर्च डाली जाती है जिसे खाकर अच्छे-अच्छों के मुँह से धुँआ निकलने लगता है। लखनऊ की शाम का असली रंग हज़रतगंज में दिखाई देता है। यहाँ सड़क पर चाट खाने की ऐसी परम्परा है कि लोग सड़क पर खड़े होकर ही इसका आनंद उठाते है। शांती से अपनी बारी का इंतज़ार करती बताशे खाती छात्राओं के चेहरों के भावों से ही स्वाद का अनुमान लगाया जा सकता है। अहमदाबाद का मानेक चौक सुबह सब्ज़ी मण्डी का रूप होता है, दोपहर को जौहरी बाज़ार का और रात होते-होते विभिन्न स्थानीय व्यंजनों के गलियारे में बदल जाता है। यहां की रौनक हमेशा त्यौहार की अनुभूति देती है।

हैदराबाद और सिकंदराबाद जुड़वां नगर कहलाते हैं। सिकंदराबाद के "पैराडाइस सर्कल" में स्थित दुकानें पूरे भारत के स्वाद का चटखारा देती हैं। कोलकाता की "डेकर लेन" में कुरमुरी झालमूरी* कागज़ के तिकोने लिफाफे में पेश किया जाने वाला एक विशिष्ट तेल रहित खाद्य है जिसे चलते फिरते खाया जाता है। भोपाल की चटोरी गली मांसाहारी व्यंजन खाने वालों को यहाँ बार-बार जाने के लिए मजबूर करती है। ग्राहक राजा समान है की नीति पर अमल करते हुए, यहाँ के दुकानदार ग्राहकों को बहुत अपनेपन से खिलाते हैं। जयपुर में चटोरियों की गली पूरे देश में करारी खस्ता कचौड़ी* की महक और स्वाद के कारण प्रख्यात है। भारतीय गलियों का यह अनुपम स्वाद एक असाधारण पहचान बनकर स्वाद-प्रेमियों के हृदय में रहेगा।

ललिता गोयल, *गृहशोभा* (अगस्त 2013) (रूपांतरित)

---

* विभिन्न व्यजंनों के नाम

www.xtrapapers.com

पाठांश ख

सचिन के नाम एक पत्र

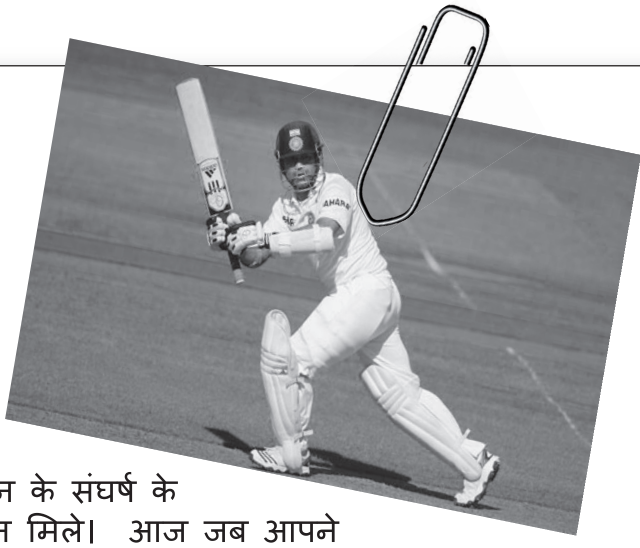

18 नवम्बर, 2013

प्रिय सचिन,

आप मुझे नहीं जानते हैं, शायद कभी जान भी नहीं पाएंगे। क्या पता रोटी, कपड़ा और मकान के संघर्ष के बीच बाद में पत्र लिखने का फिर कभी मौका न मिले। आज जब आपने क्रिकेट से विदाई ली है तो इस अवसर पर अपने हृदय में पलने वाली, आपसे जुड़ी भावनाओं को मैं आपसे बांटना चाहता हूं। मुझे स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि मुझे क्रिकेट के बारे में कुछ भी नहीं पता। बावजूद इसके आपको खेलते देखना मेरी आँखों को बहुत भाता है। पता नहीं ऐसा क्या जादू है आपमें। तभी तो जिस दिन यह समाचार आया कि अब आप इस खेल में अपने अंत की शुरुआत कर चुके हैं तो मेरे मन ने कहा कि काश, दुनिया के सैकड़ों गलत समाचारों की तरह यह भी झूठ होता। मुझे भी पता था कि कुछ सत्य इतने सार्थक होते हैं कि वह कभी नहीं बदलते।

अब आप क्रिकेट के नेपथ्य में चले जाएंगे। पता नहीं क्यों आपका रिकॉर्ड बनाते जाना मुझे उन्मादी भले न बनाता रहा हो लेकिन आपका शतक से चूक जाना एक टीस पैदा करता रहा। दुनिया ने आपको क्रिकेट का भगवान बना दिया लेकिन मुझे हमेशा आपको ईश्वर कहने से संकोच रहा। मैं नास्तिक नहीं हूँ। भगवान तो मानव की कल्पनाओं और धारणाओं का निर्माण है जबकि आप तो हमारे सामने साक्षात रूप में मौजूद हैं। ब्रायन लारा का कथन कि आपका जीवन अविश्वसनीय है और उदाहरण अतुलनीय, मुझे अच्छा लगता है। आपने जीवन पथ से विचलित हुए बिना जीने की कला मुझे आपकी ओर खींचती है। मेरे लिए आपकी क्रिकेट से विदाई, मेरे अनुराग की विदाई है।

जाते-जाते आपको "प्रणाम"।

आपका अनन्त प्रशंसक

ऋषि गौतम, http://hindi.webdunia.com (24 जनवरी 2014) (रूपांतरित)

www.xtrapapers.com

पाठांश ग

सदाचार और पत्रकारिता

दैनिक जागरण
पेयजल संकट दूर करने को यमुना पर बनेंगे तीन बैराज

एक जिलाधीश के पास उस प्रदेश के मुख्यमंत्री का फोन आया और उन्होंने उत्तर दिया कि सर मैं यह कार्य नहीं कर पाऊंगा क्योंकि यह मेरे नियमों के विरूद्ध है। मन में जिज्ञासा उठी कि जिलाधीश के व्यक्तित्व में ऐसा साहस कहाँ से आया। पूछने पर उन्होंने बताया कि केरल के एक छोटे से गांव में जहाँ उनका बचपन गुजरा, एक प्रति हिन्दी मासिक “कल्याण” की आती थी जिसे वे बचपन में नियमित रूप से पढ़ते थे। जब भी उचित या अनुचित की कोई विकट स्थिति उनके सामने आती है, पढ़ी कथा में समान स्थितियां और उसमें निर्णय उनके स्मरण में आ जाते हैं। एक वरिष्ठ प्रशासक के संस्कारों में सकारात्मक प्रभाव पत्रकारिता के माध्यम से हुआ, इस अनुभूति से मन अत्यन्त उल्लासित होता है।

पत्रकारिता के विषय व्यक्ति और समाज के मन मस्तिष्क में स्थाई रूप से जमते हैं। पत्रकारिता सामाजिक संवाद व व्यक्तिगत विकास का एक अत्यन्त प्रभावी साधन है। शोध परिणामों के अनुसार सिगरेट पीने से हानियों को विज्ञापन में देखकर किसी ने सिगरेट पीना छोड़ा हो, ऐसा उदाहरण सामने नहीं आया है। आज भ्रष्टाचार पर आधारित संवाद पूरे भारतीय समाज का मुख्य विषय बन गया है। जिन लोगों के मन में समाज और राष्ट्र के प्रति भावना कुछ दुर्बल होती है वे इस दुराचार को अपेक्षित मान लेते हैं। शोधकर्ताओं के सामने एक तथ्य और आया कि मीडिया का प्रभाव जैसे-जैसे समाज में बढ़ा, जन मानस के नकली सहयोग की भी वृद्धि हुई।

एक स्थिति तो जनमानस के लिए अत्यन्त भयंकर है। मीडिया में भ्रष्टाचार की व्याख्या उनके लिए प्रेरक प्रसंग भी बन सकती है। अपराध की जब विस्तृत व्याख्या आती है तो ऐसी प्रवृत्ति के व्यक्तियों का प्रशिक्षण होता है। नकारात्मकता को प्रमुखता देने से समाज में इसका विस्तार होता है। अनुचित को उजागर करना मीडिया का दायित्व है परन्तु उसके प्रभावों पर भी ध्यान देना होगा। भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने अपनी पुस्तक में टिप्पणी की है कि नकारात्मकता मीडिया की अनिवार्यता हो सकती है। स्वयं असहमत रहते हुए उन्होंने सुझाव दिया कि पत्रकार प्रतिदिन कम से कम एक सकारात्मक समाचार प्रेषित* करे। सूचना प्रसारण के अतिरिक्त मीडिया को सुसंस्कारों के निर्माण को प्रारम्भ कर उसे निरन्तर ज़ारी रखना है।

प्रो. बृज किशोर कुठियाला, www.srijangatha.com (9 अगस्त 2011) (रूपांतरित)

* प्रेषित: प्रसारित

www.xtrapapers.com

पाठांश घ

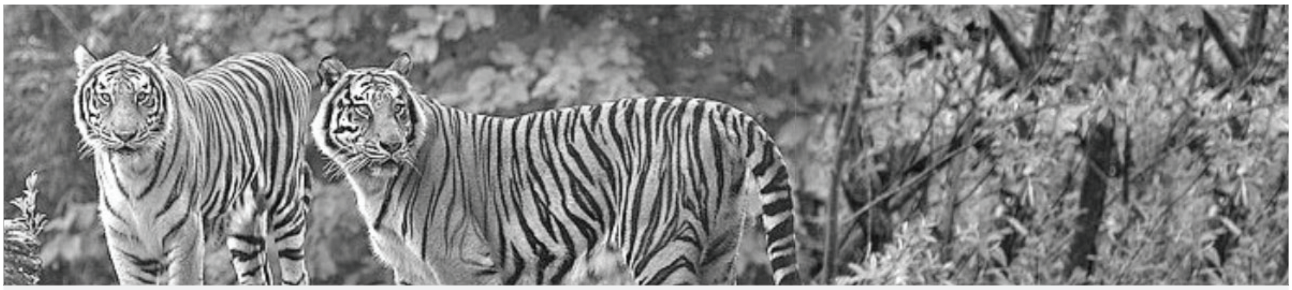

भारत के बाघों को कुत्तों से खतरा

भारत में पहले से ही शिकारियों का लक्ष्य बन रहे बाघों के सामने एक नई विपत्ति आई है। कुत्तों से फैलने वाला एक विषाणु, “कैनाइन डिस्टेम्पर वाइरस”, बाघों के लिए संकट बन गया है। कुत्ता संक्रमित हो तो ये विषाणु बाघ में चला जाता है। गतवर्ष एक बाघ की मृत्यु की पुष्टि हुई है। भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान के अनुसार केन्या के शेरों की मौत ऐसे ही विषाणु से हुई थी। बाघों का अस्तित्व संकट में है। इसके बाद राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण भी सक्रिय हुआ है।

[– X –]
मध्यप्रदेश में बीमारी निगरानी परियोजना शुरू की है। राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण ने राज्यों को टाइगर रिज़र्व के आसपास के इलाक़े में घूमने वाले कुत्तों के टीकाकरण के निर्देश दिए हैं। बीमारियों और भूकंप जैसे प्राकृतिक कारणों की वजह से सुप्रीम कोर्ट ने गुजरात सरकार से कहा था कि वो एशियाई शेरों को मध्यप्रदेश के साथ बांटे।

[– 40 –]
डॉक्टरों का कहना है, “हमारा तो यही सुझाव है कि टाइगर रिजर्व के आसपास जितने कुत्ते घूम रहे हैं उन्हें टीके लगाए जाएं। वो अगर उन्मुक्त (इम्यून) हैं तो बीमारी नहीं फैला पाएंगे। चिड़ियाघरों में टीकाकरण किया जा सकता है।” ये विषाणु आवारा कुत्तों की त्वचा में होता है।

[– 41 –]
समस्या सिर्फ यही नहीं है। जंगल सिमट रहे हैं और बाघों के सामने शिकार की समस्या खड़ी हो रही है। डॉक्टर कहते हैं, “बाघों को जब जंगल में कुछ खाने को नहीं मिलता तो वो बाहर निकलते हैं और कुत्ते मिलें तो उन्हें भी मार देते हैं।” बाघ कई बार रास्ता भूल जंगल में जाने की जगह खेतों में भटक जाते हैं।

[– 42 –]
बाघों के आदमख़ोर होने के पीछे यह विषाणु एक वजह हो सकती है। डॉक्टर कहते हैं, “हमारे पास कोई सबूत नहीं है लेकिन यह विषाणु बाघों की तंत्रिका-तंत्र पर असर डालता है। मस्तिष्क में जो बदलाव होते हैं उनकी वजह से भी हो सकता है कि बाघ जंगल से निकलकर गांवों की ओर चल पड़े।” वजह चाहे जो हो लेकिन इतना साफ है कि अगर जल्दी ही बाघों को बचाने के लिए कदम नहीं उठाए गए तो उनके अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग सकता है।

अनुराग शर्मा, बीबीसी हिन्दी (16 जनवरी 2014) (रूपांतरित)